58

प्रभु के आने तक

(13:8–14)

हम रोमियों 12:1 में आरम्भ किए व्यावहारिक भाग के अन्त में आ पहुंचे हैं। इस पाठ के लिए वचन के बीच में हमने ये वचन पढ़े थे: ''और समय को पहचान कर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है'' (13:11)। ''उद्धार'' प्रभु के वापस आकर हमें साथ ले जाने पर हमारे अन्तिम उद्धार को कहा गया है। आने वाली इस घटना के प्रकाश में पौलुस ने कहा कि ''ऐसा ही करो।'' यह वाक्यांश आगे और पीछे को ध्यान दिलाता है। क्योंकि प्रभु का आना जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब ... निकट है, इसलिए हमें बहुत कुछ करने की आवश्यकता है जिसकी आज्ञा मसीही लोगों को पौलुस ने अगली आयतों में दी। इसके अलावा हमें पहले दिए गए निर्देशों पर भी ध्यान लगाना आवश्यक है। ''ऐसा ही करो'' का अर्थ 12:1 से वचन पाठ के अन्त तक सिखाई गई हर बात हो सकती है, पर यह पाठ 13:8–14 से मेल खाएगा।

यह तथ्य कि प्रभु वापस आएगा, पहली सदी के मसीही लोगों के दिलो दिमाग पर छाया हुआ था। वे पुकारते थे ''मारानाथा'' (1 कुरिन्थियों 16:22) जिसका अर्थ है ''हे प्रभु आ'' है![1] वे प्रार्थना किया करते थे, ''हे प्रभु यीशु आ'' (प्रकाशितवाक्य 22:20)। कहते हैं कि वे जो भी कर रहे हों, बीच–बीच में रुककर वे आकाश की ओर देखते थे। आखिर यीशु ने कहा था कि ''वह बड़ी सामर्थ और महिमा के साथ बादलों में'' आएगा (मरकुस 13:26; देखें मत्ती 24:30; 26:64; मरकुस 14:62; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17; प्रकाशितवाक्य 1:7)। आरम्भिक मसीही लोगों के लिए द्वितीय आगमन का सुनिश्चित होना ज़बर्दस्त प्रेरणा थी। इसमें जो बनना चाहिए और जो करना चाहिए उस सब के लिए हमारे लिए भी यह जबर्दस्त प्रेरणा होनी चाहिए।

पाठ का नाम ''प्रभु के आने तक'' रखा गया है। ''प्रभु के आने तक'' हमें क्या *करना* चाहिए? रोमियों 13:8–14 उन दो कामों का ध्यान दिलाता है जो उस बड़े दिन की प्रतीक्षा करते हुए हर मसीही की विशेषता होनी चाहिए।

प्रेमी जन बनें (13:8-10)

चुकाया न गया कर्ज़ (आयत 8क, ख)

इस भाग का आरम्भ विचारोत्पादन करने वाली आज्ञा के साथ होता है ''और किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हो'' (आयत 8क)। कई लोग इन शब्दों का अर्थ यह लेते हैं कि मसीही व्यक्ति को किसी प्रकार के कर्ज़ के लेन–देन में शामिल नहीं होना चाहिए। अमेरिका में रहने वाले बहुत से लोग जो बड़ी मंदी (1930 के दशक की) में रहते थे, उनका यह व्यवहार है: ''यदि

नकद नहीं ले सकते, तो आप इसे मत लें!'' इस बात पर मेरी उनके साथ सहानुभूति है, पर मुझे नहीं लगता कि पौलुस के दिमाग में यह बात थी।[2]

''किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हों'' आयत 7 का अगला पड़ाव है,[3] जिसमें कहा गया है, ''हर एक का हक चुकाया करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए उसे महसूल दो; जिससे डरना चाहिए उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो।'' संदर्भ में, ''किसी बात में किसी के कर्जदार न हों'' का अर्थ है ''जो कुछ मैंने तुम्हें अभी-अभी करने के लिए बताया है ऐसा ही करो: कर अदा करो और सरकारी अधिकारियों का सम्मान व आदर करो।'' इसमें मूल विचार यह है कि ''अपना फर्ज निभाने में लापरवाही न करो।''[4] NIV में इस प्रकार है, ''कोई कर्ज बकाया न रहे।'' LNT में केवल यही कहा गया है, ''सारे कर्ज चुका दो।''

क्या ''सारे कर्ज चुका दो'' का नियम केवल सरकार द्वारा लिए कर्ज से बढ़कर और बातों के लिए लागू हो सकता है? शायद, पौलुस ने इसके साथ एक ऐसी शिक्षा भी मिलाई जो अधिक सामान्य है। बीच-बीच में हमें याद दिलाया जाना आवश्यक है कि परमेश्वर की संतान को अपने कर्ज चुकाना आवश्यक है। भजन संहिता 37:21 कहता है, ''दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नहीं।'' ऐसे मसीही लोगों द्वारा जो अपने बिलों का भुगतान नहीं करते मसीह के कार्य को बड़ी हानि हुई है।[5]

अभी जब हम इस विषय पर ही हैं मैं एक चेतावनी छोड़ देता हूं। जब हम रोमियों 13:8 के पहले भाग की बात करते हैं, कुछ मसीही लोगों को केवल इतना ही सुनाई देता है कि ''जो कुछ आपने लिया है यदि आप पूरा चुका दें तो कोई दिक्कत नहीं है।'' इसलिए उनका सोचना यह है कि जब तक वे किसी न किसी तरीके से कर्ज वापस कर सकते हैं, तब तक अपने आपको आर्थिक कर्ज में डुबोने में कोई हर्ज़ नहीं है।[6] इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें अपने बिलों का भुगतान करने के लिए पूरा समय और शक्ति लगा देनी पड़ती है और कई बार उनके पास प्रभु के लिए, अपने परिवारों के लिए या दूसरों के लिए समय या शक्ति नहीं रहती। वित्त के प्रति यह सोच बाइबल के कई नियमों का उल्लंघन करती है, जिसमें आयत 8 वाला नियम भी है ''आपस के प्रेम को छोड़।'' MSG में आयत के पहले भाग में लिखा गया है, ''कर्ज़ को बढ़ने मत दो।''

आर्थित तौर पर ज़िम्मेदार होना एक महत्वपूर्ण विषय है, पर मैं इस विषय पर आगे बढ़ना चाहता हूं जो पौलुस के मन में था। उसने कहा, ''आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हों'' (आयत 8क, ख)। हमें अपने कर्ज चुकाने आवश्यक हैं और एक ऐसा कर्ज है जो हम कभी पूरा नहीं चुका सकते। वह एक दूसरे के प्रेम का कर्ज है। डी. स्टूअर्ट ब्रिस्को ने कहा है:

> लगता है कि प्रेम लोगों के मनों में इस प्रकार रहता है जैसे किसी अच्छे आदर्श और सुखद विकल्प के बीच में अतिरिक्त हो। परन्तु प्रेरित यह ज़ोर देता है कि वास्तविक और कर देने के और निजी कर्ज वापसी के रूप में प्रेम एक दायित्व है।[7]

''हमें एक दूसरे को'' वाक्यांश का अर्थ आमतौर पर साथी मसीही होता है (देखें 12:10), और पौलुस के दिमाग में यही लोग होंगे। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे यह प्रासंगिकता कलीसिया के

साथी सदस्यों से अधिक व्यापक है। हमें हर किसी से प्रेम कर कर्ज लौटाना है।

हम सब लोगों से प्रेम करने के ''कर्जदार'' क्यों है? क्योंकि प्रभु ने हमसे प्रेम किया है। यूहन्ना ने लिखा, ''हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए'' (1 यूहन्ना 4:11)। इस पक्के कर्ज के बारे में कई लेखक ओरिगन[8] को उद्धृत करते हैं: ''तुम्हारा न चुकाया गया कर्ज केवल प्रेम का कर्ज हो यदि वह कर्ज जो पूरा चुकाने की तुम्हारी पूरी कोशिश होनी चाहिए, पर इसे चुकाने में सफल कभी नहीं होंगे।''[9] एक टीका के लेखकों ने लिखा है:

> उस प्रेम के लिए जो मसीह ने हम से किया है हम स्थाई तौर पर उसके कर्जदार हैं। इस कर्ज को लौटाना आरम्भ करने का ही केवल एक ढंग दूसरों से प्रेम करना है। मसीह का प्रेम हमारे प्रेम से असीमित रूप से बड़ा होगा इसलिए हमारी अपने पड़ोसियों से प्रेम रखने की जिम्मेदारी बनी ही रहेगी।[10]

व्यवस्था पूरी हुई (आयतें 8ग-10)

चर्चा को जारी रखते हुए पौलुस ने एक दूसरे से प्रेम रखने के महत्व का एक कारण बताया: ''क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है,[11] उसी ने व्यवस्था पूरी की है।'' मूल वचन में इसी तरह व्यवस्था के लिए ''law'' से पहले पद नहीं है। पर आयत 9 में पौलुस ने व्यवस्था से उद्धृत किया (निर्गमन 20; व्यवस्थाविवरण 5)। अंग्रेजी के अनुवादकों ने यह संकेत देने के लिए कि इसका मुख्य अर्थ व्यवस्था ही है ''the'' शब्द जोड़ दिया। जब पौलुस ने कहा कि ''क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है वही व्यवस्था को पूरा करता है,'' उसके दिमाग में पूरी व्यवस्था नहीं, बल्कि केवल वह भाग, जो व्यक्ति के अपने साथी से सम्बन्ध को दिखाती है।

आयत 9 में पौलुस ने बताया कि उसके दिमाग में क्या था। ''क्योंकि यह कि 'व्यभिचार न करना, चोरी न करना, लालच न करना' और इनको छोड़ कोई और भी आज्ञा हो तो सबका सारांश इस बात में पाया जाता है, 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' '' यह आयत निर्गमन 20 और व्यवस्थाविवरण 5 की दस आज्ञाओं में से चार उद्धृत करते हुए आरम्भ होती है। दस आज्ञाओं को आम तौर पर दो भागों में बांटा जाता है: पहली चार आज्ञाएं परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में जोड़ी हैं, जबकि अन्तिम चार का सम्बन्ध दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध थे। पौलुस के उदाहरण इस दूसरे समूह से लिए गए हैं:

- सातवीं आज्ञा: ''तू व्यभिचार न करना'' (आयत 9क; निर्गमन 20:14)। दस आज्ञाओं में ''व्यभिचार'' वह सम्भवतया हर प्रकार का शारीरिक पाप शामिल किया गया था। यह आज्ञा विशेष तौर पर उसके प्रति वफ़ादार रहने के सम्बन्ध में थी, जिससे विवाह की शपथ खाई हो। यह आज्ञा घर को बचाती थी।
- छठी आज्ञा: ''हत्या न करना'' (आयत 9ख; देखें निर्गमन 20:13)। यह किसी दूसरे का प्राण जान-बूझकर लेने के बारे में है। यह आज्ञा जीवन की रक्षा करती थी।
- आठवीं आज्ञा: ''चोरी न करना'' (आयत 9ग; देखें निर्गमन 20:15)। यह बिना अनुमति के किसी दूसरे की चीज़ को लेने के बारे में है। यह आज्ञा सम्पत्ति की रक्षा

करती थी।

- दसवीं आज्ञा: ''लालच न करना'' (आयत 9घ; देखें निर्गमन 20:17)। लालच करने का अर्थ किसी ऐसी चीज़ को पाने की ज़बर्दस्त इच्छा है, जो किसी दूसरे की हो। यह आज्ञा मन की रक्षा करती है।

ध्यान दें कि पौलुस ने निर्गमन 20 के कर्म की नकल नहीं की। इसके अलावा उसने पांचवीं और नौवीं आज्ञाओं को छोड़ दिया, जिसमें कहा गया है, ''अपने पिता और माता का आदर कर'' और ''झूठी गवाही न देना।''[12] (यह और दूसरी आज्ञाएं आयत 9 के सामान्य वाक्यांश, और कोई भी आज्ञा वाक्यांश में शामिल हैं।) आज्ञाओं के साथ पौलुस का सामान्य व्यवहार यह संकेत देता है कि वह दस आज्ञाओं को फिर से लागू करने की कोशिश नहीं कर रहा था,[13] बल्कि वह अधिकतर लोगों द्वारा माने जाने वाले नैतिक दायित्वों की सूची बना रहा था, जो भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए सतर्क है।

पौलुस ने कहा कि ऐसी सब आज्ञाओं, ''का सारांश इस बात में पाया जाता है कि 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख' '' (रोमियों 13:9ङ)। जब यीशु से पूछा गया, ''हे गुरु; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?'' (मत्ती 22:36), तो उसने उत्तर दिया:

> तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख [देखें व्यवस्थाविवरण 6:5]। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख [देखें लैव्यव्यवस्था 19:18] (22:37-39)।

इस वचन में पौलुस का ध्यान दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध पर था इसलिए उसने उस बात पर मन लगाए रखा जिसे यीशु ने ''दूसरी [बड़ी आज्ञा]'' कहा था। ''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख'' अनुवादित शब्द ''पड़ोसी'' ''निकट'' (*pelas*) के लिए शब्द से लिया गया है (*plesion*) से लिया गया।[14] ''पड़ोसी'' का मूल अर्थ ''निकट/का'' हो सकता है, परन्तु धन्य सामरी के दृष्टांत में यीशु ने स्पष्ट किया ''पड़ोसी'' शब्द उस व्यक्ति पर ही लागू नहीं होता जो हमारे निकट रहता है। इसमें वह हर व्यक्ति जो ज़रूरत के समय हमारे सम्पर्क में आता है (देखें लूका 10:25-37)।

मुझे शायद यह कहना चाहिए कि ''अपने समान'' शब्दों का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमें यह आज्ञा दी है कि अपने आप से प्रेम रखें, बल्कि इनमें यह माना गया है कि आमतौर पर लोग अपने आप से ''प्रेम'' [*agapao*] *करते हैं*। यानी अधिकतर लोग यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी बुनियादी आवश्यकताएं जैसे रोटी, कपड़ा और मकान पूरी हों, के लिए पूरी कोशिश करते हैं। ऐसे ही हमें दूसरों के प्रति चिंतित होकर और उनकी भौतिक, भावनात्मक और आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश करते हुए प्रेम [*agapao*] करना चाहिए।[15]

दूसरों से प्रेम करने पर चर्चा जारी रखते हुए हम यह पढ़ने की उम्मीद कर सकते हैं, ''प्रेम पड़ोसी का भला करता है।'' इसके बजाय पौलुस ने कहा, ''प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता''[16] (रोमियों 13:10क)। उसने सकारात्मक के बजाय नकारात्मक का इस्तेमाल क्यों

किया? सम्भवतया क्योंकि वे चार आज्ञाएं जो उसने अभी बताई थीं नकारात्मक रूप में थीं: ''व्यभिचार *न* करना, हत्या *न* करना, चोरी *न* करना, लोभ *न* करना।'' यदि हम वैसे प्रेम रखते हैं जैसे हमें रखना चाहिए तो हम इन सभी नियमों को और अपने साथी के बारे में किसी भी और नियम को मानेंगे। इस कारण पौलुस ने कहा कि ''प्रेम व्यवस्था को पूरा करना है'' (8:10ख)।

मैं यह स्पष्ट कर दूं कि आयत 10 में पौलुस ने क्या *नहीं* कहा। वह यह *नहीं* कह रहा था कि ''प्रेम व्यवस्था को पूरा करना है,'' इसलिए हमें परमेश्वर की व्यवस्था की कोई आवश्यकता नहीं रही। कुछ देर पहले एक लहर में यह नारा लगाया गया था कि ''एक मात्र व्यवस्था प्रेम है।'' इस लहर में शामिल लोग अपने आपको डॉक्ट्रिन और नैतिकता के बारे में बाइबल की सभी आज्ञाओं से स्वतन्त्र घोषित करते थे। पुन: मैं कहता हूं कि पौलुस का उद्देश्य परमेश्वर द्वारा दी गई हर व्यवस्था को देना नहीं था। ऐसा निष्कर्ष रोमियों 12-16 में कही पौलुस की अधिकतर बातों को नकार देगा। जॉन आर. स्टॉट ने लिखा है:

> बिना स्पष्ट नैतिक मापदण्ड के प्रेम अपने आप में प्रबन्ध नहीं कर सकता। इसीलिए पौलुस ने यह नहीं लिखा कि ''प्रेम व्यवस्था का अन्त है,'' बल्कि उसने यह लिखा कि ''प्रेम व्यवस्था को पूरा करता है।'' क्योंकि प्रेम और व्यवस्था को एक दूसरे की आवश्यकता है, प्रेम को दिशा के लिए व्यवस्था की आवश्यकता है, जबकि व्यवस्था को अपनी प्रेरणा के लिए प्रेम की आवश्यकता है।[17]

क्या पौलुस यह कह रहा था कि हमें परमेश्वर के नियमों की (जो नये नियम में दिए गए हैं) कोई आवश्यकता नहीं रही? यदि नहीं है तो फिर वह क्या कह रहा *था*। जैसा कि पहले ही सुझाव दिया था कि वह यह कह रहा था कि प्रेम हमें आयत 9 में दी गई आज्ञाओं को मानने (पूरा करने) की प्रेरणा देता है। अपनी पत्नी से प्रेम रखने वाला आदमी उसका विश्वास योग्य होता है। यदि कोई किसी भाई से प्रेम रखता है, तो वह उसे हानि नहीं पहुंचाएगा और बेशक उसकी हत्या नहीं करेगा। जो दूसरों से प्रेम रखता है वह उन्हें लूटेगा नहीं। दूसरे लोगों का भला होने पर वह आनन्दित होगा और उनकी चीज़ों का लालच नहीं करेगा।

मैं यह भी सुझाव देता हूं कि परमेश्वर ने लोगों को नियम इसलिए दिए कि वे परमेश्वर और एक दूसरे के प्रति प्रेमी व्यक्ति के व्यवहारिक ढंग सीखें। इसलिए जब कोई प्रेम करना सीखता है तो वह परमेश्वर की व्यवस्था के उस बड़े उद्देश्य को पूरा कर रहा होता है।

जब तक प्रभु न आए, हमें क्या करना चाहिए। हमें लोगों से प्रेम करना सीखना चाहिए।

भक्तिपूर्ण जीवन बिताएं (13:11-14)

इससे हम इस पाठ के परिचय में दोहराई गई आयत में आ गए हैं: ''और समय को पहचान कर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है'' (आयत 11)। जैसा कि कहा गया है, ''ऐसा ही करो'' का अर्थ अभी-अभी दी गई प्रेम करने की चेतावनी हो सकता है या इसका अर्थ अध्याय 12 के आरम्भ से लेकर अब तक कही गई पौलुस की हर बात हो सकता है। भक्तिपूर्ण जीवन बिताने के सम्बन्ध में प्रेरित जो कुछ कहने वाला था

यह इसका उद्देश्य हो सकता है। डेल हार्डमैन ने लिखा है कि रोमियों से लेकर यहूदा तक सब पत्रियों में मुख्यतया भक्तिपूर्ण जीवन की बात है।[18] अगली आयतें इसका ज़बर्दस्त प्रदर्शन हैं।

''समय क्या है ?''

पौलुस ने माता-पिता द्वारा बच्चे को जगाने और फिर उसे दिन भर का काम बताने के रूप का इस्तेमाल किया। इस भाग का आरम्भ ''समय को पहचान कर ऐसा ही करो,[19] इसलिए कि अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है''[20] (आयत 11क)। टीकाकार, विशेष, समय और ''घड़ी'' को पहचानने का प्रयास करते हैं। नीरो द्वारा मसीही लोगों के सताव से लेकर यरूशलेम के विनाश के समय तक के अनुमान लगाए जाते हैं। यह वाक्यांश शायद जान-बूझ कर अस्पष्ट है ताकि यह शब्द आज भी उतने उपयुक्त हों जितने पौलुस के समय में थे। आत्मिक तौर पर सोये होने के बारे में, हम जल्दी सो नहीं सकते और देर से उठ नहीं सकते। ''जाग उठने'' का ''समय'' हमेशा *अभी* रहता है। मैं बिस्तर पर सो रहे लड़के को सहलाते हुए उसे जोर से यह कहने की कल्पना कर सकता हूं, ''उठने का समय हो गया है!''

पौलुस ने आयत 11 में आगे कहा, ''तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।'' जैसा कि परिचय में कहा गया था, यहां पर ''उद्धार'' का अर्थ स्वर्ग में मिलने वाला अन्तिम उद्धार है (देखें 1 पतरस 1:5)। प्रभु के वापस आने पर ही हमें यह उद्धार मिलेगा (देखें इब्रानियों 9:28), इसलिए जो ''जिस समय विश्वास किया था, उस समय के विचार से ... निकट है।'' ''जिस समय हमने विश्वास किया था'' का अर्थ यह है कि जब हम मसीह में विश्वासी बने थे। हम विश्वास में बने रहते हैं, इसलिए कुछ अनुवादों में ''पहले'' शब्द जोड़ा गया है: जैसे ''*पहले* के समय के विचार से जब हमने विश्वास किया था'' (NIV; RSV)। पौलुस उन्हें (यह याद दिलाते हुए कि जब पहले उन्होंने विश्वास किया) उनकी आशा (उनके आने वाले उद्धार का पूर्वानुमान लगाते हुए) स्मरण दिला रहा था। आर. सी. बेल्ल ने इसे पौलुस की ''दबाओ और खींचो'' प्रेरणा कहा है।[21] पौलुस के शब्दों में उसके पाठकों के लिए जाग उठने की आवश्यकता का संकेत है क्योंकि मसीह किसी भी समय आ सकता था। यदि वे आत्मिक तौर पर सोये रहते तो उन्होंने उसके वापस आने के लिए तैयार नहीं होना था।

प्रभु वापस कब *आएगा*? यीशु ने कहा, ''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता'' (मरकुस 13:32)। पौलुस को सही-सही समय का तो पता नहीं था,[22] लेकिन उसे यह पता था वह समय उस समय से निकट था जब उसके पाठकों ने बपतिस्मा लिया था। यदि प्रेरित के समय यह था, तो आज हमारे समय में उससे भी अधिक सच है! द्वितीय आगमन पौलुस द्वारा रोमियों की पत्री लिखे जाने के लगभग दो हज़ार वर्ष पहले लिखे जाने के बाद और नज़दीक आ गया है!

आयत 12 में पौलुस ने ''जाग उठने'' पर प्रवचन देना जारी रखा: ''रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है'' (रोमियों 13:12क)। ''रात'' ''दिन'' की पहचान करने में टीकाकार बहुत सृजनात्मकता दिखाते हैं,[23] परन्तु पौलुस सम्भवतया अपनी एकरूपता को जारी रखा था। हमारे घराने में, जब ''रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने को है'' का अर्थ केवल यह है कि

उठकर काम में लग जाने का समय आ गया! मेरे दिमाग में पिता द्वारा पुत्र को यह कहते हुए कि ''उठने का समय हो गया है'' बिस्तर से हिलाने का दृश्य आता है। मैं पुत्र को बुड़बुड़ाते हुए अपनी चादर खींचते देख सकता हूं, ''डैडी, पांच मिनट और सो लेने दो।'' (हां ऐसा दृश्य मैंने अपने समय में देखा है।) पिता उत्तर देता है, ''एक पल भी नहीं! *अभी* उठो!'' पौलुस के कहने का अर्थ यही था।

''हम क्या करें'' (आयतें 12ख-14)

उठकर अपनी आंखें धोने के बाद हम क्या करते हैं। उसके बाद पौलुस ने कहा कि हमें कपड़े पहनने हैं: ''इसलिए हम अंधकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें'' (आयत 12ख)। पौलुस आम तौर पर कपड़े उतारने और पहनने की तरह व्यवहार को ''उतारने'' और ''पहनने'' के रूपक का इस्तेमाल करता था (इफिसियों 4:22-24; कुलुस्सियों 3:8-10)। रोमियों 13:12 में वास्तव में हमें सोने के कपड़े उतारकर दिन को कामकाज करने के उपयुक्त कपड़े पहनने की चुनौती दी गई है।[24]

''अंधकार के कामों'' वाक्यांश पाप पूर्ण कार्यों का संकेत है। वे ''अंधकार के काम'' इसलिए हैं क्योंकि ज्यादातर वे रात के समय किए जाते हैं या अंधेरे में छुपकर किए जाते हैं (देखें यूहन्ना 3:19; 1 थिस्सलुनीकियों 5:7)। यह मत भूलें कि पौलुस *मसीही* लोगों से बात कर रहा था। क्या मसीही लोग कभी अनैतिकता के भूखे नहीं होते? हां, होते हैं और जब वे गलती करते हैं तो उन्हें चुनौती दिए जाने की आवश्यकता है: ''उस बुराई को अपने जीवन से निकाल दो। उससे पीछा छुड़ाओ!''; ''उन बातों से दूर भागो जिन्हें लोग अंधेरे में करते हैं'' (रोमियों 13:12; फिलिप्स)।

बेशक रात को पहनने वाले कपड़े उतारना ही काफ़ी नहीं है; हमारे लिए दिन वाले कपड़े पहनना भी ज़रूरी है। पौलुस ने ''ज्योति के हथियार बांध'' लेने के लिए कहा। अपने बहुवचन रूप में अनुवादित शब्द ''हथियार'' (*hoplon* से) का अर्थ ''युद्ध के हथियार'' है।[25] रोमियों 6:13 में ''अधर्म के हथियार'' और ''धर्म के हथियार'' वाक्यांशों में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ।[26] हम आराम से टहलने के लिए कपड़े नहीं पहन रहे बल्कि ''विश्वास की ऐसी कुश्ती लड़ने'' के लिए तैयार हो रहे हैं (1 तीमुथियुस 6:12क)।

उठकर कपड़े पहनने के बाद हमें क्या करना है? हमें ऐसा जीवन जीना है, जिससे हमारे सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता को महिमा मिले।''जैसा दिन को शोभा देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें'' (रोमियों 13:13क)। ''जैसा दिन'' यह संकेत देता है कि हमारे जीवन लोगों के सामने खुले होने चाहिए जिसे कोई भी देखे हमें शर्मिंदा न होना पड़े।

''शोभा देना'' के बारे में पौलुस के उन ''इनकार के कारणों'' अर्थात ''लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, व्यभिचार, और लुचपन, और झगड़े और डाह'' की घोषणा करेंगे (आयत 13ख)। यह ''अंधकार के कामों'' की पूरी सूची नहीं है, बल्कि यह आधी सूची है। ऐसी सूचियों में पौलुस की तरह जैसे उसने गलातियों 5:19-21 में जोड़ा हम भी ''और ऐसे ऐसे'' जोड़ सकते हैं (KJV)। हमारे वचन पाठ के छह उदाहरणों को तीन सुरों में बांटा गया है।

पहला जोड़ा, ''लीला क्रीड़ा और पियक्कड़पन है।'' लीला क्रीड़ा (*komos*) से लिया गया

है जो आयत 13 में ''अत्यधिक दावत ... , लीला क्रीड़ा, मौजमस्ती'' का संकेत है।[27] NIV में ''orgies'' है। *Komos* ''मौजमस्ती की वह किस्म बताता है जो व्यक्ति को नीचे करती है और दूसरों के लिए मूर्खता है।''[28] ''पियक्कड़पन का परिणाम''[29] आमतौर पर यही होता था सो यह ''पियक्कड़पन'' (*methe*; ''नशा'') के पाप से जुड़ गया। उसके बाद ''व्यभिचार और लुचपन'' है। ''व्यभिचार'' शारीरिक पाप के लिए शब्द (*porneia*) से नहीं बल्कि ''बिस्तर'' के लिए शब्द *koite* के बहुवचन रूप से अनुवाद किया गया है। *Koite* का इस्तेमाल ''शारीरिक भोग के लिए कोमल शब्द'' के रूप में किया जाता था।[30] ''बिस्तर'' शब्द का इस्तेमाल कई बार वैसे ही किया जाता था जैसे आज ''वे हमबिस्तर हो गए'' कह जाता है। *Koite* के बहुवचन रूप ''बिस्तरों'' का अर्थ यहां अवैध शारीरिक सम्बन्ध है।

''व्यभिचार'' ''लुचपन'' के साथ जुड़ा है जिसका अनुवाद *aselgeia* से किया गया है। यह यूनानी शब्द '' 'अति, व्यभिचार, संयम की कमी, अश्लीलता, विलासिता,' ... प्रमुख विचार निर्लज्ज व्यवहार है।''[31] विलियम बार्कले ने लिखा, ''*aselgeia* यूनानी भाषा के सबसे गंदे शब्दों में से एक है। यह केवल अनैतिकता का वर्णन ही नहीं करता, बल्कि यह उस व्यक्ति का भी वर्णन करता है जो पाप में खो बैठा है।''[32] जॉन मैकार्थर ने कहा है, ''यह आज के समाज की विशेष बात कामुक विलासिता और भ्रष्टता के ढंग को बताता है जिसे आमतौर पर अन्तर के निशान के रूप में शान से दिखाया जाता है।''[33]

यदि पाप के पहले दो जोड़ों ने आपको दोषी नहीं ठहराया, तो यह तीसरा ठहराता है: ''झगड़ा और डाह।'' ''झगड़ा'' *eris* से लिया गया है जिसका अर्थ ''विवाद'' है, जो ''शत्रुता''[34] की अभिव्यक्ति ''विवाद'' का संकेत है।[35] *Eris* विरोध से भरी मुकाबले की भावना को दर्शाता है, जो किसी का भी या दूसरों का कितना भी नुकसान क्यों न हो जाए, अपनी मनवाने के लिए लड़ता है।'' यह ईर्ष्या (*zelos*[36]) से जुड़ा है जो उस मन को दिखाता है ''जो उससे जो उसके पास है संतुष्ट नहीं हो सकता किसी दूसरे को मिलने वाली हर आशीष जो उसे नहीं मिलती पर ईर्ष्या भरी नज़र रखता है।''[37]

कई लोग पहले चार पापों अर्थात लीला क्रीड़ा, पियक्कड़पन, व्यभिचार और लुचपन को ''बुरे पाप'' मानते हैं, पर झगड़े और डाह को ''इतने बुरे नहीं'' की श्रेणी में रखते हैं। यह तथ्य कि पौलुस ने अन्तिम दो का नाम दूसरे पापों के साथ दिया है इस बात का संकेत है कि परमेश्वर पापों को ''बड़ा'' या ''छोटा'' के रूप में नहीं बांटता। पहले चार पापों में विस्तृत किए गए ''पापपूर्ण और स्वार्थी''[38] ... अतिभोग की ... और सभ्य अभिव्यक्तियां ही हैं। हो सकता है कि पौलुस ने उन्हें अन्त में इसलिए दिया हो कि उन्हें हमारे लिए इस सूची में दिए गए दूसरे पापों के बजाय इनसे छुटकारा पाना कठिन होता।

हम इन ''अंधकार के कामों'' से कैसे बच सकते हैं ? पौलुस ने दो बातें कहीं हैं, जिनमें से एक सकारात्मक है और एक नकारात्मक। पहले सकारात्मक को देखते हैं: आयत 12 में इस प्रेरित ने अपने पाठकों से ''ज्योति के हथियार बांध'' लेने को कहा था; आयत 14क में उसने उन्हें ''यीशु मसीह को पहन लेने का आग्रह किया।'' NEB में इन दो आयतों की चुनौती में सम्बन्ध का संकेत है: ''मसीह यीशु को वह हथियार बनने दो जो तुम्हें पहनना है।''

मसीह को ''पहन'' [*enduo से*] लेने का क्या अर्थ है ? अध्याय 6 में हमें बताया गया था

कि बपतिस्मा लेने पर हमें ''मसीह यीशु में बपतिस्मा'' और ''उसके साथ एक हो जाते हैं'' (आयतें 3, 5)। पहले एक पत्र में पौलुस ने लिखा ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया [*enduo से*] है'' (गलातियों 3:27)। मसीह में बपतिस्मा लेकर मसीही बनने के समय हमने मसीह को ''पहन लिया, पर हमें ऐसे लोगों *के रूप में रहना* भी सीखना आवश्यक है कि जिन्होंने मसीह को पहना'' है। हमें दयालुता और प्रभु की सामर्थ को पहनना आवश्यक है।[39] यदि हम ऐसा करते हैं तो हम आयत 13 में दिए गए पापों की किस्मों से बचेंगे।

पौलुस की नकारात्मक आज्ञा आगे है। यह एक व्यावहारिक आज्ञा है: ''और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो'' (रोमियों 13:14ख)। ''उपाय'' *pronoia* से लिया गया जिसका अर्थ ''पूर्वविचार'' (*pro* [''पूर्व''] के साथ *noeo* [''विचार करना'']) है। *Pronoia* ''का इस्तेमाल किसी बात के लिए उपाय करने के विचार [*poieo*, 'बनाना'] से किया जाता है।''[40]

शरीर के लिए उपाय करने का क्या अर्थ होगा? किसी बात के लिए, किसी भी बात के लिए तैयारी करने पर विचार करें। यह आने वाला सफ़र हो सकता है ... या निकट आ रही सर्दियां ... या भविष्य की कोई बात।[41] इनमें से प्रत्येक के लिए आप उपाय कैसे करते हैं? मैं सीधा सा उदाहरण देता हूं। आप लकड़ियों के बीच में से जा रहे हैं और आग जलाने का निर्णय लेते हैं। आप उसके लिए ''उपाय'' कैसे करते हैं? पहले तो आप को लकड़ियों के ढेर की और फिर आग जलाने के लिए और सामग्री की आवश्यकता होगी, सो आप सब चीज़ें इकट्ठी करें। फिर आप को आग जलाने के लिए लकड़ियों की आवश्यकता पड़ेगी; हो सकता है कि आपकी जेब में माचिस की डिबिया हो। लकड़ी और आग के साथ आपने आग जलाने के लिए ''उपाय'' किया। यदि आप लकड़ियों और लपटों को निकाल दें तो आग नहीं लग सकती। पौलुस के कहने का अर्थ था कि ''अपनी वासनाओं को जलने से बचाने के लिए माचिस फैंक कर लकड़ियां इकट्ठी करना बंद कर दें!''

यदि मसीह में परिवर्तित कोई शराबी अपने घर में शराब रखे और अपने पुराने शराबी साथियों के साथ संगति न छोड़े, तो वह नशा करने का उपाय नहीं कर रहा है। यदि आप शनिवार देर रात तक जागते रहें और अगली सुबह आराधना सेवा के लिए आराम करने का विचार न करें, तो आप बंदगी में न जाने का उपाय कर रहे हैं।

अपने आप से पूछें, ''मेरी आत्मिक कमियां क्या हैं?'' (आपको उनका पता होना चाहिए क्योंकि शैतान को आपकी कमज़ोरियों का पता है।) फिर पूछें, ''मुझे परीक्षा में पड़ने के लिए कौन से लोग, कौन सी जगह, कौन से काम और कौन सी परिस्थितियां सबसे अधिक प्रोत्साहित करती हैं?'' उस प्रश्न का उत्तर देने के बाद आप ऐसे लोगों, कार्यों और परिस्थितियों से बचने का हर प्रयास करें। इसके उलट करना ''शरीर के लिए इसकी लालसाओं के अनुसार उपाय करना'' है। ए. जे. फोरमैन ने आयत 14 के अन्त को अपने शब्दों में इस प्रकार लिखा है: ''पाप के लिए योजना न बनाएं; इसका स्वागत न करें; इसे कुछ अवसर न दें।'' पाप को अपने घर की दहलीज से धक्का दे दें तो यह आपके घर में घुस नहीं पाएगा।[42]

कलीसिया के इतिहास में अगस्टिन का नाम प्रस्तुत लोगों में आता है। *कनफैशन्स* लिखते हुए

उसने अपने मनपरिवर्तन के बारे में बताया। 386 ई. के गर्मियों के मौसम में मिलान इटली में वाकपटुता के सम्मानित प्रोफेसर के रूप में वह लगभग मसीही बनने ही वाला था। परन्तु वह पाप के अपने पुराने जीवन से नाता तोड़ने में सफल नहीं रहा। एक दिन वह किसी मित्र के बाग में था जब उसे किसी बच्चे के यह कहने की आवाज सुनाई दी, ''उठाकर पढ़ो।'' पास के बेंच पर पौलुस की पत्रियों की प्रति थी। अगस्टिन ने उसे उठा लिया और जो सबसे पहले शब्द उसे दिखाई दिए वे ये थे: ''... न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में। बरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो'' (आयतें 13, 14)।[43] उसने लिखा, ''इसके आगे मैंने नहीं पढ़ा न मुझे आवश्यकता थी; क्योंकि उस वाक्य के खत्म होने के तुरन्त बाद एक प्रकाश के रूप में मेरे हृदय में रक्षा घुस गई और संदेह की हर बात निकल गई।''[44]

पौलुस के शब्दों से अगस्टिन को बदलने में सहायता मिली और वे आपको बदलने के लिए भी सहायक हो सकते हैं। अब से लेकर जब तक प्रभु दोबारा नहीं आता, यह आवश्यक है कि आपका जीवन भक्तिपूर्ण हो।

सारांश

रोमियों 13:8-14 को सुस्त मसीही लोगों को जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार का नाम दिया गया है। इस वचन पाठ को प्रक्षेप में करने का एक सीधा तरीका यह है कि जबकि प्रभु किसी भी समय आ सकता है कि हम सब को अपने आपसे पूछना आवश्यक है कि ''क्या मैं उसके आने के लिए तैयार हूं?'' यदि आपके आत्मिक जीवन में कोई कमी है तो मेरी प्रार्थना है कि वह कमी आपके जीवन में से निकल जाए।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस पाठ का इस्तेमाल करने के लिए आपको चाहिए कि उन्हें जो अभी मसीही नहीं हैं, बताएं कि वे मसीह में कैसे आ सकते हैं (यूहन्ना 3:16; लूका 13:3; मरकुस 16:16)। यह भी समझाएं कि अविश्वासी मसीही अपने जीवनों की आत्मिक आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)।

इस पाठ के शीर्षक ''परमेश्वर की अलार्म घड़ी'' है। आर्थिक रूप में जिम्मेदार व्यक्ति होने पर सिखाना या प्रचार करना आरम्भ करने के लिए आयत 8 के पहले शब्दों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]NASB वाली मेरी प्रति के एक नोट के अनुसार मारानाथा का मूल अर्थ यही है। [2]बाइबल उधार देने और उधार लेने की बात करती है। निर्गमन 22:25; भजन संहिता 37:26; मत्ती 5:42; लूका 6:35; फिलेमोन 17, 18. [3]यूनानी धर्मशास्त्र में 7 और 8 आयतों के बीच की बाधा हिन्दी या अंग्रेजी से अधिक स्पष्ट है। आयत 7 में यूनानी शब्दों का अनुवाद ''चुकाया करो'' और आयत 8 में ''कर्ज़दार'' है। एक ही मूल शब्द से लिए गए हैं। [4]''कर्ज़दार न हो'' वर्तमान काल में है जो निरन्तर कार्य का संकेत देता है। इस वाक्यांश का अनुवाद ''कर्ज़ लेते न रहो'' हो सकता है। [5]कई बार

यह हमारे नियन्त्रण से बाहर परिस्थितियों के कारण हो जाता है; यदि ऐसा हो भी जाए तो भी विवेकी मसीही अपने लेनदारों के पास जाकर इसका निपटारा करेंगे ताकि अन्त में वह अपना कर्ज़ चुका सके।[6]अमेरिका में क्रेडिट कार्ड के साथ ऐसा करना आसान है। कई लेखक आवश्यकता के कारण उधार लेने और लाचारी के कारण उदार लेने में अन्तर करते हैं।[7]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंटी सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 238 से लिया गया।[8]ओरिगन कथित "चर्च फादर" में से एक था।[9]डब्ल्यू. सेंडे एंड ए. सी. हेडलम, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स,* दि इंटरनेशनल क्रिटिकल कमैंट्री (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1906), 373 में उद्धृत।[10]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमैन, एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एल्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 253.

[11]आयत 8 में, यूनानी धर्मशास्त्र में "अपने पड़ोसी" (NASB-अनुवादक) की जगह "दूसरे" है; परन्तु 9 और 10 आयतें स्पष्ट करती हैं कि "दूसरा" आपका "पड़ोसी" ही है।[12]कुछ प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में जोड़ा गया है, "तू झूठी गवाही न देना" (देखें KJV), परन्तु प्राचीन हस्तलेखों में केवल NASB वाले चार ही हैं।[13]दस आज्ञाओं सहित मूसा की व्यवस्था के साथ मसीही व्यक्ति के सम्बन्ध के विषय में, *रोमियों, 2* पुस्तक "मसीही व्यक्ति और व्यवस्था मसीह और कानून (7:1-4)" पाठ में 7:1-4 टिप्पणियों पर विचार करें ।[14]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़ अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्टरी डिक्शनरी ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमसन नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 429.[15]आप *रोमियों, 4* पुस्तक में "अप्रिय से प्रेम कैसे करें (12:14, 17-21)" पाठ पर विचार करें।[16]यूनानी धर्मशास्त्र का मूल अर्थ है "बुराई नहीं करता।"[17]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 349-50.[18]ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी ओक्लाहोमा, 16 अक्टूबर 2005 को दिया गया डेल हार्टमैन का प्रवचन।[19]"समय" का अनुवाद *kairos* से किया गया है जो एक ठहराए हुए या एक निश्चित काल, मौसम की बात करता है (वाइन, 633)। कुछ अनुवादों में "मौसम" है।[20]कई वक्ता यहां हंसाने के लिए जोड़ देते हैं: "पौलुस अपने पत्र के पढ़े जाने के समय ऊंघ रहे लोगों को जगाने की कोशिश नहीं कर रहा था।..." फिर वे समझाते हैं कि पौलुस के कहने का क्या अर्थ है।

[21]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 154.[22]नये नियम के परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए वक्ता यह नहीं सिखाते थे कि वित्तीय आगमन तुरन्त होने वाला था, बल्कि वे इसे अवश्य होना बताते थे। यानी वे यह नहीं सिखाते थे कि मसीह उनके जीवन काल में ही आ *रहा* था। बल्कि वे यह सिखाते थे कि वह किसी भी समय *आ* सकता है।[23]रात/दिन का अन्तर वचन में कई बार मिलता है। उदाहरण के लिए, देखें यूहन्ना 9:4 और 1 थिस्सलुनीकियों 5:5.[24]अपने समाज के लिए इसे बदल लें। आप कह सकते हैं, "चादर उतार डालो और काम वाले कपड़े पहन लो।"[25]वाइन, 37. ह्यूगो मेकोर्ड के अनुवाद में "युद्ध के हथियार" की जगह "हथियार" है।[26]*रोमियों, 2* पुस्तक में "मसीह में नया जीवन कैसे जीएं (6:5-14)" पाठ में 6:13 पर टिप्पणियां देंखे।[27]वाल्टर ब्राउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्करण, संशो. विलियम एफ़ अर्डंट एण्ड एफ़ विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1957), 462.[28]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 178.[29]वाइन, 532.[30]ब्राउर, 440. इब्रानियों 13:4 *koite* का अर्थ परमेश्वर द्वारा स्वीकृत विवाह में शारीरिक सम्बन्ध है।

[31]वाइन, 353.[32]बार्कले, 179.[33]जॉन मैकार्थर, *रोमन्स 9-16,* दि मैकार्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री सीरीज़ (शिकागो: मूडी प्रैस, 1994), 267.[34]वाइन, 604.[35]मैकार्थर, 267.[36]"जोश" के इस्तेमाल के लिए अच्छे अर्थ में *zelos* (देखें रोमियों 10:2) परन्तु रोमियों 13:13 का इस्तेमाल स्पष्ट रूप से बुरे अर्थ में किया गया है।[37]बार्कले, 179.[38]ब्रिस्को, 241.[39]"पहनना" का इस्तेमाल बुरे अर्थ में किया जा सकता है (जैसे वह "अच्छा बर्ताव *पहनती है*" में ज़ोर देने के लिए आप कह सकते हैं कि पौलुस यीशु जैसे बनने की कोशिश पर बात कर रहा था)।[40]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 473, एन 87.

[41]इस और अगले पद्य को जहां आप रहते हैं वहां के समाज के अनुसार बदल लें।[42]कैनथ जे. फोरमैन, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि लेमैन'स बाइबल कमैंट्री, अंक 21 (रिचमोंड, वर्जीनिया: जॉन नोक्स प्रैस, 1961), 57.[43]बेशक अगस्टिन ने अंग्रेज़ी में नहीं लातीनी में शब्दों को पढ़ा।[44]अगस्टिन *कन्फैशन्स* 8.12.